

तकनीक, सोच और लगन की प्रदर्शनी

विज्ञान भवन में सीएसटी अभियांत्रिकी विद्यार्थी अनुदान कार्यक्रम के तहत हुए आयोजन में दिखी प्रतिभा

जासं, लखनऊ : विज्ञान भवन में तकनीक, सोच और लगन की अनूठी प्रदर्शनी लगी। प्रोजेक्ट्स के रूप में उग्र के विभिन्न कॉलेज के बीटेक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों की मेहनत सामने थी। सीएसटी उग्र अभियांत्रिकी विद्यार्थी अनुदान कार्यक्रम के तहत आयोजन किया गया था।

संयुक्त निदेशक सीएसटी यूपी राधे लाल और डॉ. राजेश गंगवार ने बताया कि परियोजना के तहत वर्ष 2017-18 में उग्र के तकनीकी विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों से विद्यार्थियों के प्रस्ताव ई-मेल के माध्यम से मांगे गए थे। 160 प्रोजेक्ट प्राप्त हुए। मूल्यांकन के बाद 40 प्रोजेक्ट्स को अधिकतम 20,000 रुपये के अनुदान के लिए चयनित किया गया था। बीते वर्ष 2017 के नवंबर और दिसंबर में योजना के प्रथम चरण में 10,000 रुपये की अग्रिम राशि प्रोजेक्ट निर्माण के लिए विद्यार्थी के बैंक खाते में भेजी गई थी। प्रदर्शनी में द्वितीय चरण में चयनित 40 प्रोजेक्ट्स का मूल्यांकन हुआ।

कुछ ऐसे रहे प्रोजेक्ट्स

प्रोजेक्ट : सेंसर लैटिक्स कन्जरवेशन

टीम : हर्षिता शर्मा, शिवांश गुप्ता, अनुपमा महेश, शांतनु भारद्वाज।

उद्देश्य : प्रोजेक्ट के माध्यम से मिट्टी में नमी, तापमान, रोशनी आदि के बारे में पता चलता है। जिससे अच्छी पैदावार में मदद मिलेगी।

प्रोजेक्ट : एंटी डीरेलमेंट एंड हेल्थ फेसिलिटी सिस्टम

टीम : दीपिका, अभिषेक आर्या और मनीष भारद्वाज।

उद्देश्य : ट्रेन दुर्घटनाओं को रोकना। प्रोजेक्ट में एंटी फॉग सिस्टम, इमरजेंसी हेल्थ बटन, ट्रैक पर मरम्मत और बाधा का पता लगाना, चालक को सोने से रोकने के लिए अलार्म, एक ट्रैक पर दो ट्रेनों के आने पर रोक, स्मोक और फायर अलार्म को प्रदर्शित किया गया।

प्रोजेक्ट : हृदय रोगों का पता लगाना।

टीम : कुलसुम रहमान, अंजलि द्विवेदी, मयूरी घोष।

उद्देश्य : 10 बिंदुओं पर हृदय संबंधी रोगों की पहचान।

प्रोजेक्ट : एप्लीकेशन ऑफ आइओटी इन सोलर एनर्जी एनालिटिक

टीम : आयुष शुक्ला, अविनाश, गौरव, दिव्यांश।

उद्देश्य : सोलर पैनल में आने वाली दिक्कतों का पता लगाना।

प्रोजेक्ट : डायनमिक वायरलेस चार्जिंग ऑफ एन इलेक्ट्रिक कार

टीम : गौरव चौबे, शिवम शुक्ला, रवि प्रताप सिंह।

उद्देश्य : सड़क पर चलते हुए गाड़ी अपने आप चार्ज हो जाएगी।

प्रोजेक्ट : बुलेट (द पाइप क्लीनिंग रोबोट)

टीम : सनी गुप्ता और राघव त्यागी।

उद्देश्य : सीवरज की सफाई में होने वाली जन हानि को रोकना।

संवेदना से भरी सृजनशील युवाशक्ति

दुर्गा शर्मा • लखनऊ

युवा शब्द को उलटा करके पढ़ेंगे तो वायु होगा। इस वायु में सृजनात्मकता और संवेदनशीलता साथ बहती है। अपनी आवश्यकताएं तो हर कोई पूरी कर लेता है। औरों की जरूरतें सृजन का आधार बनने तो यह अनुकरणीय है। विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में आए तमाम युवाओं में कुछ की सोच खास रही। इस सोच में औरों के लिए फिक्र छिपी थी। आज का यह सृजन भविष्य में निःशक्तों के सशक्तीकरण का आधार बन सकता है। चलिए जानते हैं प्रोजेक्ट के पीछे की कहानी विद्यार्थियों की ही जुबानी।

दिव्यांगों के लिए खास गाड़ी

प्रोजेक्ट : कैब्रियोलेट वेहिकल

विद्यार्थी : शिवम मिश्रा, निशांत कुशवाहा, ऋतु शर्मा, तृप्ति गुप्ता, सौरभ सिंह।

जीभ से चलने वाली इस खास गाड़ी को बनाने में एक साल लगा। ऋतु शर्मा ने बताया कि दादी को लकवा मार गया है। चलने फिरने में अक्षम थी। उनकी स्थिति को देखकर इस गाड़ी को बनाने का ख्याल आया। बताती हैं, हेड बैंड में तीन सेंसर लगे हैं, जिसे दिव्यांगजन अपनी जीभ से संचालित कर सकते हैं। साथ ही जीपीएस और जीएसएम और हेल्थ मॉनिटरिंग सिस्टम का भी प्रयोग है। इससे लोकेशन, हृदय गति और शारीरिक तापमान आदि का पता चलता रहेगा। वीडियो चैट की भी सुविधा है।



कैब्रियोलेट वेहिकल का प्रदर्शन करते विद्यार्थी



विद्यार्थियों ने समझाई स्मार्ट ब्लाईंड वॉकर स्टिक की कार्यप्रणाली

दृष्टिहीनों के लिए स्मार्ट बैसाखी

प्रोजेक्ट : स्मार्ट ब्लाईंड वॉकर स्टिक, विद्यार्थी : रोहताश, अंजना, डॉली, अभिषेक।

चार महीने की कड़ी मेहनत के बाद दृष्टिहीनों के लिए स्मार्ट बैसाखी तैयार हुई। इसकी मदद से दृष्टिहीनों को रास्ते में आने वाले अवरोधों का पता चलता है। इमरजेंसी में मदद भी उन तक पहुंच जाएगी। ग्रुप लीडर रोहताश बताते हैं, बैसाखी में तीन अल्ट्रासोनिक सेंसर (सामने और दाएं-बाएं) लगे हैं। अवरोध आने पर बजर, वाइब्रेशन और मैसेज की व्यवस्था है। सामने 105 सेमी और दाएं-बाएं 60 सेमी तक के दायरे में आने वाले अवरोध के बारे में बैसाखी संवेत करती है। गड़बड़े और पानी के लिए भी अलग से दो सेंसर लगाए गए हैं। अगर स्टिक रखकर भूल गए हैं तो भी आइआर सेंसर और रिमोट की मदद से उसे आसानी से खोजा जा सकता है।

ठंडे पानी संग ठंडी हवा भी



छात्रों ने फ्रिज प्लस एसी के फायदे बताए

प्रोजेक्ट : फ्रिज प्लस एसी, विद्यार्थी : अरमान, मोहित, सत्यम, अजीत।

सिंगल कंप्रेसर और इवैपरेटर पर काम करने वाला फ्रिज प्लस एसी तैयार करने में तीन महीने का समय लगा। चंदौली निवासी सत्यम ने बताया कि वाराणसी में पढ़ाई के लिए किराये पर रहते हैं। एक बार किचन में खाना बनाते समय गर्मी लगी। फ्रिज खोला तो राहत का पहसास हुआ। तभी इस प्रोजेक्ट पर काम करने का ख्याल आया। लकड़ी, मेटल, फैन, सोलर पैनल और टिन बॉक्स आदि के प्रयोग से यह मॉडल तैयार किया। हमारे फ्रिज प्लस एसी मॉडल में दो घंटे का बैक अप और सोलर सेंसर है।